"कुतुबुद्दिन ऐबक की जीवनी का मूल्यांकन"

" कुतुबुद्दिन ऐबक अत्यन्त साहसी, धैर्यवान व्यक्ति था। वह एक साधारण दास की स्थिती से अपनी योग्यता एवं स्वामि-भक्ति के बल पर गोरी के भारतीय सम्राज्य का प्रतिनिधि तथा दिल्ली सल्तनत् का प्रथम सुलतान बना।

अपने प्रयत्नों से गजनी से सम्बन्ध विच्छेद कर भारत को उसके प्रभुत्व से मुक्त कर दिया। ऐबक के बारे में हसन निजामी लिखते हैं — "वह न्यायप्रिय शासक था। उसने जनता को शान्ति व समृद्धि प्रदान की।"

वस्तुतः कुतुबुद्दिन ऐबक के पास समय का अभाव था। वह अपने जीवन में दिल्ली सल्तनत् को पूर्ण स्थायित्व प्रदान नहीं कर सका। कुतुबुद्दिन ऐबक की मृत्यु के बाद अगला शासक अरामशाह बना, किन्तु वह कुतुबुद्दिन ऐबक की तरह योग्य नहीं था। कुतुबुद्दिन ऐबक के कई कार्य अधूरे रह गये। उसके पश्चात् इल्तुतमिश को अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए प्रयास करना पड़ा।

कुतुबुद्दिन ऐबक ने प्रशासनिक क्षेत्र में जिस अब्बासी गजनवी और भारतीय परम्पराओं का अनुपालन किया, उसका अनुपालन परवर्ती सल्तनत् शासकों द्वारा भी किया गया। इस तरह वह एक ऐसे राज्य का संस्थापक बना जो भारत में लगभग 300 वर्षों तक शासन किया।